DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

आधुनिक काल

Part -6

LIVE 01-07-2024 09:00 AM

केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000)

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जनपद के कमासिन गाँव में हुआ था।

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवियों के प्रमुख स्तम्भ हैं। ये जीवन्त प्रकृति-चित्रण के लिए अधिक विख्यात रहे हैं। कवि की दृष्टि से मार्क्सवादी विचारधारा मुख्यरूप से परिलक्षित होती है। उनकी कविता का झुकाव लोकवादी रहा है तथा सामाजिक जनजीवन, देश-प्रेम एंव प्रकृति के प्रति उनका गहरा लगाव भी काबिले तारीफ है।

काव्य रचनाएँ

1. युग की गंगा (1947)
2. नींद के बादल (1947)
3. लोक और अलोक (1957)
4. फूल नहीं रंग बोलते हैं (1965)
5. आग का आईना (1970)
6. गुलमेहन्दी (1978)
7. पंख और पतवार (1979)
8. बम्बई का रक्त स्नान (1981)

9. हे मेरी तुम (1981)

10. मार प्यार की थापें (1981)

11. कहें केदार खरी-खरी (1983)

12. अपूर्वा (1984)

13. जमुन जल तुम (1984)

14. बोले-बोल अबोल (1985)

15. जो शिलाएँ तोड़ते हैं (1985)

16. आत्मगंध (1988)

17. अनहारी हरियाली (1990)

18. खुली आँखे : खुले डैने (1993)

19. पुष्पदीप (1994)

20. बसंत में हुई प्रसन्न पृथ्वी (1996)

रचनाओं से सम्बन्धित तथ्य

केदार जी को 'केन का कवि' कहा जाता हैं।

- केदार जी ने 'युग की गंगा में' विषम अर्थव्यवस्था का यथार्थ चित्र खींचा हैं।

- जिन समस्याओं को प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में अंकित किया है, उन्हीं समस्याओं को केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविताओं में चित्रित किया है।
- 'कहें केदार खरी-खरी' में इन्होंने डॉलर के खतरे के प्रति भारतीय राजनेताओं को आगाह किया है।
- 'बसन्त में प्रसन्न हुई पृथ्वी' कविता में केदार जी प्राकृतिक सौन्दर्य में सहृदयता से तल्लीन हुए हैं।
- 'हे मेरी तुम' और 'जमुनजल तुम' कविता संग्रह केदार जी ने अपनी पत्नी की याद में लिखी हैं।

- केदारनाथ अग्रवाल अपनी काव्य-यात्रा के आरम्भिक दौर में 'बालेन्दु' उपनाम से रचनाएँ करते थे। तब वे ब्रजभाषा में कवित्त, सवैया छन्द में लिखते थे।

डॉ. रामविलास शर्मा (1912-2000)

- डॉ. रामविलास शर्मा आधुनिक हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध आलोचक, निबन्धकार, विचारक एवं कवि थे।
- उन्नाव जिला के ऊँचगाँव सानी में इनका जन्म हुआ था। हिन्दी जाति की अवधारणा रामविलास शर्मा के जातीय चिन्तन का केन्द्रीय बिन्दु है। भारतीय साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन तथा वैश्विक साहित्य से

अंतःक्रिया के द्वारा रामविलास जी ने साहित्य के जातीय तत्वों के प्रगतिशील भूमिका की पहचान की है।

गजानन माधव मुक्तिबोध (1917-1964)

मुक्तिबोध हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, आलोचक, निबन्धकार, कहानीकार तथा उपन्यासकार थे। उन्हें प्रगतिशील कविता और नई कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है।

मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार 'तार सप्तक' के माध्यम से सामने आई।

प्रमुख काव्य कृतियाँ : चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964), भूरी-भूरी खाक धूल (1980)

आलोचकों ने गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की समानता कबीर से की है।

- 'अन्धेरे में' मुक्तिबोध की सबसे लम्बी तथा सर्वाधिक चर्चित कविता है। इन्होंने इस कविता में अपनी समग्र रचनात्मकता को पूरे आवेग के साथ मूर्त किया है।
- 'अन्धेरे में' कविता एक स्वप्न कथा है, एक फैंटेंसी है, यह फैंटेंसी अन्त: दर्शन की ऐसी प्रक्रिया के रूप में प्रयुक्त है, जिसमें एक स्तर पर साम्राज्यवादी, पूँजीवादी और फासिस्ट प्रतिष्ठानों की गतिविधियों के

प्रत्यक्ष

रहस्य खुलते हैं और दूसरे स्तर पर इस बाह्यजगत और अन्तर्जगत् की विषमता के संवेदनात्मक ज्ञान परस्पर आबद्ध हैं।

- मुक्तिबोध ने फैंटेसी को 'अनुभव की कन्या' कहा है।
- 'सिरफिरे का गीत' मुक्तिबोध का आत्मनिरीक्षण का गीत है। इसमें कवि ने युग की संवेदन शून्यता, कर्तव्यहीनता अकर्मण्यता और घोर स्वार्थी मनोवृति का उद्घाटन किया हैं।
- मुक्तिबोध की 'भूल-गलती' कविता में भूल गलती को ही सुल्तान के रूप में पेश किया गया है।

- 'ब्रह्म-राक्षस' मुक्तिबोध की प्रसिद्ध लम्बी कविता हैं। इसमें ऐसे ब्राह्मण को प्रस्तुत किया गया है, जो अतृप्त आकांक्षाओं के साथ मर गया है और ब्रह्म-राक्षस बन गया है।
- शमशेर बहादुर सिंह ने मुक्तिबोध की 'अन्धेरे में' कविता को आधुनिक जन इतिहास का स्वतन्त्रता से पूर्व और पश्चात् का एक 'दहकता इस्पाती दस्तावेज' कहा जाता है।

त्रिलोचन

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले में कटघरा चिरानी पट्टी में जगरदेव सिंह के घर हुआ था।

त्रिलोचन ने भाषा शैली और विषय वस्तु सभी में अपनी अलग छाप छोड़ी है। त्रिलोचन ने वही लिखा जो कमजोर पक्ष में था।

त्रिलोचन ने लोक भाषा अवधी और प्राचीन संस्कृत से प्रेरणा ली, इसलिए उनकी विशिष्टता हिन्दी कविता की परम्परागत धारा से जुड़ी हुई है।

कविता संग्रह : धरती (1945), गुलाब और बुलबुल (1956), दिगन्त (1957), ताप के ताए हुए दिन (1980), शब्द (1980), उस जनपद का कवि हूँ (1981), अरघन (1984), तुम्हें सौंपता हूँ (1985), फूल नाम है एक (1985), अनकहनी भी कुछ कहनी है (1986), जीने की कला (2004)

- 'अमोला' त्रिलोचनजी की अवधी काव्य कृति है।
- त्रिलोचन शास्त्री का वास्तविक नाम वासुदेव सिंह है।

- त्रिलोचन के काव्य में ग्रामीणों और गाँवों की समस्याएँ हैं। धर्म-ईश्वर के प्रति वे अन्ध-श्रद्धा नहीं रखते, अपने तेवर और विचारों से प्रगतिवादी प्रतीत होते हैं।
- त्रिलोचन सॉनेट रचना के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं।
- त्रिलोचन ने रोला, कुण्डलिया, बरवै आदि पुराने छन्दों का भी प्रयोग किया है।

24
D+R
दोहा+रोला
12-1-3
7-2-4

प्रयोगवाद (1943-1953)

प्रयोगवाद हिन्दी साहित्य खासकर कविता की उस प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है, जिसकी तरफ अज्ञेय ने दूसरा सप्तक की भूमिका में संकेत किया था। प्रयोग अपने आप में इष्ट नही हैं बल्कि वह साधन और दोहरा साधन है। वह एक ओर तो सत्य को जानने का साधन है दूसरी तरफ वह उस साधन को भी जानने का साधन है। यह स्पष्टीकरण तार सप्तक की कविताओं को प्रयोगवादी कहे जाने पर दिया गया था।

डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त के अनुसार- "वर्ष 1943 में अज्ञेय के नेतृत्व मे हिन्दी कविता के क्षेत्र में एक नए आन्दोलन का प्रवर्तन हुआ, जिसे अब तक

विभिन्न संज्ञाएँ- प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद, नई कविता आदि प्रदान की गई है। ये संज्ञाएँ इसके विकास की विभिन्न अवस्थाओं एवं दिशाओं को सूचित करती हैं, यथा प्रारम्भ में जबकि कवियों का दृष्टिकोण एवं लक्ष्य स्पष्ट नहीं था, नूतनता की खोज के लिए केवल प्रयोग की घोषणा की गई थी, तो इसे 'प्रयोगवाद' कहा गया।" इस काव्यधारा की कविताओं को 'प्रयोगवाद' नाम सर्वप्रथम आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने अपने एक निबन्ध 'प्रयोगवादी रचनाएँ' में प्रदान किया था।

अज्ञेय इस काव्यधारा के प्रवर्त्तक माने जाते हैं। उनके द्वारा सम्पादित 'प्रतीक' पत्रिका से इसकी शुरुआत मानी जाती है।

लक्ष्मीकान्त वर्मा के अनुसार, "प्रयोगवाद ज्ञान से अज्ञान की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरुकता है।"

तारसप्तक

तार सप्तक एक काव्य संग्रह हैं। अज्ञेय द्वारा वर्ष 1943 में नई कविता के प्रणयन हेतु सात कवियों का एक मण्डल बनाकर तार सप्तक का संकलन एवं सम्पादन किया गया। तार सप्तक नई कविता का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है। तार सप्तक के संकलन से हिन्दी काव्य साहित्य में प्रयोगवाद का आरम्भ होता है।

‘तार सप्तक’ (1943) में संकलित कवि

कवि	जन्म-मृत्यु (वर्ष)	जन्म स्थान
अज्ञेय	1911-1987	देवरिया
रामविलास शर्मा	1912-2000	उन्नाव
गजानन माधव मुक्तिबोध	1917-1964	ग्वालियर.
प्रभाकर माचवे	1917-1991	ग्वालियर
गिरिजा कुमार माथुर	1918-1994	मध्य प्रदेश
भारत भूषण अग्रवाल	1919-1975	मथुरा
नेमिचन्द्र जैन	1918-2005	आगरा

'दूसरा सप्तक (1951) के कवि

कवि	जन्म-मृत्यु (वर्ष)	जन्म स्थान
भवानी प्रसाद मिश्र शकुन्त माथुर	1913-1985	होशंगाबाद
हरिनारायण व्यास	1923	मध्य प्रदेश
शमशेर बहादुर सिंह	1911-1993	देहरादून
नरेश मेहता	1924-2000	गुजरात
रघुवीर सहाय	1929-1990	लखनऊ
धर्मवीर भारती	1926-1997	इलाहाबाद

‘तीसरा सप्तक (1959) के कवि

कवि	जन्म-मृत्यु (वर्ष)	जन्म स्थान
कुँवर नारायण	1927-2017	फैजाबाद
कीर्ति चौधरी	1934	उन्नाव
प्रयाग नारायण त्रिपाठी	1919	रायबरेली
मदन वात्स्यायन:	1922	
विजयदेव नारायण साही	1924-1982	काशी
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	1927-1983	बस्तीकी
केदार नाथ सिंह	1934-2018	चकिया

चौथे सप्तक (1979) में संकलित कवि

अवधेश कुमार

स्वदेश भारती

सुमन राजे

राजेन्द्र किशोर

राजकुमार कुम्भज

नन्द किशोर आचार्य

श्रीराम वर्मा

नई कविता (1954)

'नई कविता' नाम अज्ञेय का दिया हुआ है। 'नई कविता' का आरम्भ वर्ष 1954 में जगदीश गुप्त द्वारा सम्पादित 'नई कविता' पत्रिका के प्रकाशन से माना जाता है।

नई कविता हिन्दी साहित्य मे उन कविताओं को कहा गया, जिनमें परम्परागत कविता से आगे नए भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और नए शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। यह प्रयोगवाद के बाद विकसित हुई हिन्दी कविता की नवीन धारा है।

नई कविता ने लोक-जीवन की अनुभूति, सौन्दर्य-बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया। साथ ही साथ लोक-जीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक-जीवन के बीच से चुनकर उसने अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया। नई कविता में प्रतीकों की अधिकता है। नई कविता की भाषा किसी एक पद्धति में बँधकर नहीं चलती। सशक्त अभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें अधिक हुआ है। नई कविता में आज की क्षणवादी और लघुमानववादी दृष्टि जीवन-मूल्यों के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टि है। मुक्तिबोध ने लिखा है।" नई कविता वैविध्यमय

जीवन के प्रति आत्मचेतस् व्यक्ति की प्रतिक्रिया है। नई कविता का स्वर एक नहीं विविध हैं।"

डॉ. धर्मवीर भारती ने लिखा है "नई कविता प्रथम बार समस्त जीवन को व्यक्ति या समाज के तंग विभाजनों के आधार पर न मापकर मूल्यों की सापेक्ष स्थिति में व्यक्ति और समाज दोनों को मापने का प्रयास कर रही है।"
विजयदेव नारायण साही ने 'नई कविता' में 'लघु मानव की प्रतिष्ठा की।

नई कविता में दो प्रमुख तत्व हैं-

1. अनुभूति की प्रामाणिकता और

2. बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि। नई कविता में कैक्टसवाद का जन्म होता है।

प्रमुख कवि

नई कविता के प्रमुख कवियों का विवरण इस प्रकार हैं-

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

अज्ञेय को कवि, शैलीकार, कथा-साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण मोड़ देने वाले कथाकार, ललित निबन्धकार, सम्पादक और अध्यापक के रूप में जाना जाता है।

प्रमुख काव्य कृतियाँ

भग्नदूत (1933), चिन्ता (1942), इत्यलम् (1946), हरी घास पर क्षण भर (1949), बावरा अहेरी (1954), इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये (1957), अरी ओ करुणा प्रभामय (1959), आँगन के पार द्वार (1961), कितनी नावों में कितनी बार (1967), क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970), सागर मुद्रा (1970), पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974), महावृक्ष के नीचे (1977), नदी की बाँक पर छाया (1981)।